

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२३/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी अपनी मूलस्वरूप अवस्था में बैठ जाएं... देखिए आपका मूलस्वरूप... चमकता हुआ सितारा... यही मेरा सत्य स्वरूप है... यही मेरा मूलस्वरूप है... जैसे परमात्मा ने मूल रचना की थी... यह वही मेरा मूलस्वरूप है... सभी देखें अपने मूलस्वरूप को...

संगम युग में अगर किसी को सच में परिवर्तन होना है, तो सबसे पहले एक ही बात करना जरूरी होगा। वह बात कौन सी होगी? हर कोई चेक करे क्या हो सकती है वह बात। हर कोई सोचे। हर कोई १०-१५ सेकंड ले लेना। हर कोई सोचना - संगम युग में परिवर्तन के लिए कौन सी एक बात होनी या वह बात करनी आवश्यक है? क्या सभी ने कुछ सोचा है? क्या सभी के मन में कुछ बातें आई हैं? हर कोई अपने से चेक करे। संगम युग में एक ही बात करनी सबसे महत्वपूर्ण है जो आपके आंतरिक और बाहरी परिवर्तन के लिए जरूरी है - वह है त्याग। जब तक कोई अस्तित्व अभी के समय में जिस सुखों में जी रहा है, पल रहा है, जिन इच्छाओं के पीछे चल रहा है, जब तक वह इन बाहरी सुखों का, बाहरी इच्छाओं का त्याग नहीं करता तब तक उसको उसके जीवन में आंतरिक और बाहरी परिवर्तन नहीं मिल सकता। आप पुराने जीवन में जैसे चल रहे थे, अगर उस ही प्रकार से अभी भी आप चल रहे हो माना आपके जीवन में आपने कुछ भी त्यागा नहीं है। त्याग करना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है परिवर्तन की यात्रा के लिए। तपस्या तब ही हो सकती है जब आपके पास त्याग करने का संस्कार हो, त्याग करने का गुण हो। किसी को चार घंटा या आठ घंटे बैठकर तपस्या करनी है तो उसके लिए उसको उसकी सभी शारीरिक बातों का, मन-बुद्धि-संस्कारों का जो कुछ भी चल रहा है, उन सभी का उस तपस्या के समय में त्याग

करना जरूरी है, तब ही उससे वह तपस्या हो पाएगी। अगर किसी को लगता है कि मेरे अंदर यह जो आदत है, जो मायावी अस्तित्व की है, मुझ आत्मा की नहीं है, तो वह आदत छोड़ने के लिए उसको उस बात का त्याग करना ही होगा।

किसी को मोबाइल देखने की, टीवी देखने की आदत लगी है और वह सिर्फ मन ही मन कहता रहे, “यह मुझे नहीं चाहिए, यह मुझे नहीं करना, पर फिर भी मैं मेरा समय इसमें व्यर्थ गंवा रहा हूँ” – यह कितनी भी बार मन में दोहराए या किसी को आप शेयर भी करें या रुह-रिहान में परमात्मा को भी सुनाएं, फिर भी कुछ नहीं हो सकता। आपको उस बात का त्याग करना ही होगा। जिन कर्मेन्द्रियों से आपकी कोई विपरीत आदत बन जाती है, उन्हीं कर्मेन्द्रियों को ऑर्डर देके, आपको उनका त्याग करना होता है। तभी वह आपके कर्मेन्द्रियों के संस्कार से वह संस्कार मिटता जाएगा।

कभी कोई जादू नहीं होता। आपको ही करना होगा।

इसलिए किसी भी प्रकार के कोई भी मायावी अस्तित्व से कोई विकारी संकल्प भी आए, तो भी कर्मों में कभी उसे आने नहीं देना क्योंकि कर्मों में जो कर्मेन्द्रियां लगती हैं उनका संस्कार बन चुका है। तो उस कर्मेन्द्रियों को उस कर्म करने के लिए उसका त्याग करना अवश्य होगा। आपको किसी बात को छोड़ने के लिए सबसे पहले उसका त्याग करना आवश्यक है। पर वह त्याग कब कर पाएंगे? जब आप आत्मा को दिल से लगेगा, “यह गलत है, यह नहीं करना चाहिए”। जब यह दिल से आत्मा कहेगी तब ही आत्मा की ऊर्जा, मन-बुद्धि-संस्कारों में जाएगी और तभी मन-बुद्धि-संस्कारों द्वारा वह ऊर्जा स्थूल कर्मेन्द्रियों में आएगी। क्योंकि आत्मा ने अपनी ताकत दिल से लगाई है, उन बातों के लिए जो वो अपने बाहरी कर्मेन्द्रियों से नहीं चाहती। ऊर्जा आत्मा से मन-बुद्धि-संस्कारों को मिलेगी और मन-बुद्धि-संस्कारों द्वारा ही पूरे शरीर के सभी कर्मेन्द्रियों को मिलेगी। फिर शरीर का संस्कार कैसा भी हो उसे परिवर्तन होना ही होगा। क्योंकि आत्मा का संकल्प है और आत्मा का संकल्प कभी कोई रोक नहीं सकता। आत्मा इतनी शक्तिशाली है कि उसका हर संकल्प जो सच्ची दिल से उठाया जाता है वह पूर्ण होकर ही रहता है। पर यह कब? जब सच में आत्मा को वह बात नहीं चाहिए। इसलिए जब भी कोई दिल से चाहेगा मेरा

व्यवहार आत्मिक स्थिति वाला हो, जब किसी आत्मा की दिल से यह चाहना होगी, तब ही आत्मा से ऊर्जा सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों में आती जाएगी और अपने आप व्यवहार वैसे ही होगा।

संगम युग में परिवर्तन के लिए बहुत सहज प्रोसेस रखी है परमात्मा ने। कोई कठिनाई नहीं किसी भी विपरीत गुणों को त्यागने की या कोई विपरीत मायावी अस्तित्वों को छोड़ने की या किसी भी प्रकार की विपरीत आदतों को त्यागने की बस दिल का संकल्प हो। क्योंकि परमात्मा भी कभी नहीं चाहते कि किसी भी आत्मा को किसी भी प्रकार से परिवर्तन के लिए उसको मेहनत करनी पड़े या उसको एक्स्ट्रा एफर्ट कुछ भी डालने पड़ें। हर कोई अपने से चेक करे कि आपका कोई ऐसा विपरीत अस्तित्व या कोई विपरीत गुण या कोई विपरीत स्वभाव-संस्कार अगर नहीं छूट रहा है, तो जरूर कहीं न कहीं अब तक आत्मा को वह पूर्ण रियलाइज़ नहीं हुआ है कि यह गलत है। अब तक आत्मा को वह पूर्ण समझ नहीं मिली है कि हम संगम युग में हैं, हमारा कर्तव्य क्या है, हमें इस समय में क्या करना है, और हम क्या कर रहे हैं।

यह जब तक हर आत्मा को पूर्ण रूप से सच्ची दिल से रियलाइज़ नहीं होता और आत्मा उसके लिए अपना संकल्प नहीं रचती तब तक वह बातें जो विपरीतता की हैं, वह उसके जीवन से नहीं जा पाएंगी। इसलिए त्याग के बिना परिवर्तन कभी नहीं हो सकता। बॉडी कॉन्शियसनेस का त्याग करने बिगर सोल कॉन्शियसनेस की अवस्था नहीं आ सकती। क्रोध का त्याग करने बिगर प्रेम स्वरूप की अवस्था नहीं आ सकती। इस ही प्रकार से सभी विपरीत गुणों की बात है। हर कोई अपने से चेक करे कि इस समय आपके अंदर जो कुछ भी बातें हैं क्या वह सभी बातें आपको सही लगती हैं या आप आत्मा चाहते हो कि यह परिवर्तित हो जाएं पूर्ण रूप से। परमात्मा ने आत्माओं के पास विराट ताकत देके रखी है। आत्मा स्वयं में पूर्ण समर्थ है। उसको उसका परिवर्तन करने के लिए उसको उसके परिवर्तन के लिए संकल्प उठाने के लिए और संकल्प उठने के बाद, वह सिद्ध होता ही है।

इसलिए हर कोई चेक करे कि आपके अंदर अगर कोई बात का परिवर्तन अभी भी पूर्ण रूप से नहीं आ रहा है तो जरूर कहाँ न कहाँ त्याग की कमी है। कोई स्कूल-कॉलेज में पढ़ाई में नंबर वन लेते

हैं, वह बच्चे भी अब पढ़ाई के लिए बाहरी सभी मौजों का, सुखों का, आनंद का त्याग करते हैं और अपना समय अपनी पढ़ाई में लगाते हैं और उसी का फल स्वरूप वह नंबर वन लेते हैं। पर बिना त्याग के कभी परिवर्तन का सोचना भी नहीं अगर आप परिवर्तन चाहते हो तो।

हर कोई आत्मा की अपनी मर्जी है कि उसको क्या अपने अंदर परिवर्तन करना है और क्या रखना है। पर सभी आत्माएं सदैव ध्यान रखना संगम युग में जो-जो बातें आप आपके अंदर परिवर्तन नहीं कर पाएंगे, वह सभी बातें आने वाले कल्प में सभी युगों के सभी जन्मों में वह आपके साथ ही रहेगी। क्योंकि संगम युग है ही सारी बातें क्लियर करने का युग। सारी बातें इस ही युग में क्लियर करके अपना नया चोपड़ा खोलने का युग - जो कि अगले कल्प में, अगले युगों के लिए जो पार्ट आपको बजाना है उसका नया चोपड़ा खोलने का युग। तो सभी अपने से चेक करना। अगर आप आपके अंदर किसी भी बात का, किसी भी संस्कार का दिल से परिवर्तन चाहते हैं, तो क्या आपने उससे संबंधित कोई बातें, कोई आदतें त्यागी हैं? यह बहुत गंभीर विषय है। पर जिसने इसे समझा उसका संपूर्ण परिवर्तन होकर ही रहेगा। त्याग तपस्या है, त्याग ही सेवा है, त्याग ही जीवन है। सभी अपनी-अपनी चेकिंग अवश्य करें। कहां तक किन-किन बातों का त्याग किया है और कितना करना बाकी है। अगर आप, आप में परिवर्तन चाहते हो तो आप आत्मा का दिल का संकल्प, परमात्मा की मदद सदैव मिलती रहती है।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः